ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इन्द्रो विश्वस्य राजति। सामवेद 456
परमैश्वर्यशाली परमेश्वर सारे विश्व का शासक और संचालक है।
The Bounteous Lord is the monarch and the motivation of the whole world.

वर्ष 39, अंक 12 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 25 जनवरी, 2016 से रविवार 31 जनवरी, 2016
विक्रमी सम्वत् 2072 सृष्टि सम्वत् 1960853116
दयानन्दाब्दः 192 वार्षिक शुल्कः 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें- www.thearyasamaj.org/aryasandesh

छपते-छपते

शोक! शोक! महाशोक!!!

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान, गौ सेवक, योग ऋषि स्वामी रामदेव जी के गुरु

आचार्य बलदेव जी का दुःखद निधन

आर्य जगत की महान क्षति - महाशय धर्मपाल

देश विदेश के आर्यजनों में भारी शोक - आर्य सुरेश चन्द्र अग्रवाल

गुरुकुल प्रणाली के महान पोषक थे आचार्य बलदेव - धर्मपाल आर्य

विश्व विख्यात संस्कृत व्याकरण के सूर्य का अस्त - प्रकाश आर्य

आर्य समाज के सर्वोच्च शिरोमणि संस्था सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान, गो भगत, महर्षि दयानन्द के अनन्य सेवक, गुरुकुल परम्परा के पोषक आचार्य बलदेव जी का आज 28 जनवरी 2016 को प्रातः 6 बजे दुःखद निधन हो गया। उनका पार्थिव शरीर आर्यजनों के दर्शनार्थ दयानन्द मठ रोहतक में रखा गया है। कल 29 जनवरी को दोपहर 12 बजे अंतिम संस्कार किया जाएगा।

यह सूचना छपते-छपते प्राप्त हुई है। अतः विस्तृत समाचार एवं जानकारी आर्य संदेश के अगले अंक में प्रकाशित की जाएगी। आचार्य बलदेव जी के दुःखद निधन पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार की ओर से विनम्र श्रद्धांजलि।

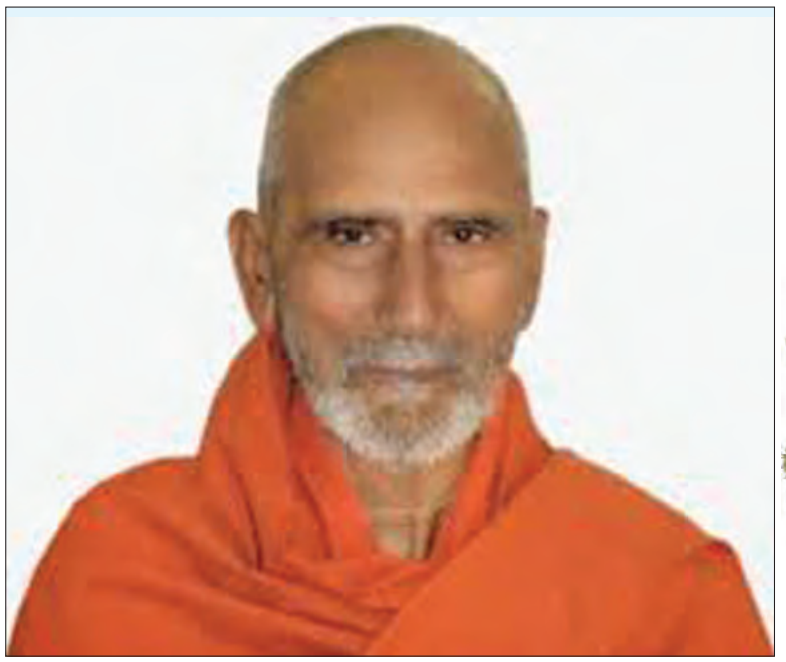

अंतिम संस्कार
शुक्रवार 29 जनवरी 2016
सिद्धांती भवन,
दयानन्द मठ रोहतक

लाशों की जाति मत तलाशो!

प्र एक बार फिर हैदराबाद को दादरी बनाया जा रहा है। देश के तमाम नेता हैदराबाद पहुँच रहे हैं, इस बार मरने वाला कोई अखलाक नहीं बल्कि एक दलित नवयुवक है जिसका नाम रोहित है। हैदराबाद सेंट्रल यूनिवर्सिटी से पीएचडी कर रहे एक छात्र रोहित वेमुला ने 17 जनवरी की रात को फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली थी। आत्महत्या के इस मामले को लेकर जमकर सियासत हो रही है। इस सियासत में मीडिया, नेता से लेकर छात्र संगठन तक कूद पड़े हैं। दलित समुदाय की सहानुभूति बटोरने के लिए बहुत से नेता हैदराबाद जाकर रोहित के परिवार वालों और आंदोलन रत छात्र संगठनों से मिल रहे हैं जबकि दूसरी तरफ अन्य छात्र संगठनों का कहना है कि जब याकूब मेनन को फांसी दी गई थी तो एक प्रभावशाली छात्र संगठन ''अंबेडकर स्टूडेंट्स एसोसिएशन'' ने इस फांसी के खिलाफ प्रदर्शन किया था जिसका नेतृत्व राहुल ने किया था। जब परिसर में एबीवीपी के अध्यक्ष सुशील कुमार ने इसका विरोध किया तो उनके साथ दुर्व्यवहार किया गया जिसके परिणाम स्वरूप उन्हें अस्पताल में भर्ती करवाया गया। यह एक बड़ी विडंबना है कि विश्वविद्यालय प्रशासन ऐसी सारी घटनाओं का मूक गवाह बना रहा।

राहुल की मौत का समाचार जानकर भारतवर्ष के नेताओं ने उसकी जाति जानने के बाद राजनीति शुरू कर दी है। भले ही नेता लोग कहते हों कि मामला एक छात्र की आत्महत्या का है पर यह बात गले से नीचे इस वजह से नहीं उतर रही कि इस देश में रोजाना सैकड़ों की तादाद में छात्र मरते हैं। छात्रों की इस देश में किसे क्या पड़ी है? दिल्ली से सिर्फ 500 किलोमीटर दूर 30 घरों के चिराग बुझ गए और किसी को इसकी कोई फिक्र नहीं हुई। पिछले दिनों गुजरात से इंजीनियर बनने का सपना लेकर नितेश कोटा पहुंचा था, लेकिन सपनों का बोझ ऐसा बना कि फंदा लगाकर जान दे दी। ये दुख पिछले एक साल में 30 परिवारों पर टूटा है। साल 2013 में 17 छात्र-छात्रों ने फांसी के फंदे पर अपनी जिंदगी को लटका दिया। साल 2014 में ये आंकड़े और बढ़ गए। कोटा में करीब 26 घरों के चिराग बुझ गए और 2015 से अब तक 30 छात्र अपनी जान दे चुके हैं। किन्तु किसी नेता को इनसे क्या लेना-देना! यहाँ तो मामला जातिवाद का है और इस बार मरने वाला राहुल दलित जाति से है और ऐसी खबरें मीडिया और नेताओं के लिए नोट और वोट बटोरती हैं। इस प्रसंग पर कल बीबीसी हिंदी ने एक फोटो इन्टरनेट के माध्यम से डाली थी जिसमें एक नवयुवक आत्महत्या कर रहा होता है नीचे खड़े कुछ नेता टाइप लोग पूछ रहे थे 'भाई अपनी जाति बताकर मरना बाद में परेशानी होती है' ये तस्वीर जिसने भी बनाई उसके व्यंग्य में गंभीरता छिपी थी। कारण आप जातिप्रमाण पत्र के लिए कहीं मत जाओ। नेता आपको प्रमाणित कर देंगे। किन्तु इस सारे प्रसंग में एक प्रश्न कई दिनों से चीख रहा है कि आज जो नेता दलितों के प्रति हमदर्द बनकर खड़े हैं। ये नेता उस दिन कहाँ थे जब जातिवाद से त्रस्त होकर भगाना हिसार हरियाणा के 100 से ऊपर दलित परिवार सामूहिक रूप से मुस्लिम बन गये थे। उस दिन इनकी दलित आत्मा किसने पददलित कर दी थी? या फिर मुस्लिम वोट बैंक

...शेष पेज 8 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य केन्द्रीय सभा के आगामी कार्यम

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	ऋषि बोधोत्सव	नव संस्येष्टि (होली)	आर्य समाज स्थापना दिवस
शुक्रवार, दिनांक 4 मार्च 2016, सायंकाल 3 से 7 बजे	दिनांक 7 मार्च 2016, प्रातः 8 से सायं 4 बजे स्थान- रामलीला मैदान, दिल्ली	दिनांक 23 मार्च 2016, सायं 3 बजे स्थान- रघुमल आर्य कन्या सी.से. स्कूल, राजा बाजार, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली	दिनांक : 8 अप्रैल 2016, प्रातः 8 बजे स्थान- फिक्की सभागार, 12 खम्बा रोड, निकट मण्डी हाउस मैट्रो स्टेशन, नई दिल्ली

स्वाध्याय

स्पृहणीय ऐश्वर्य प्रदान कर

वसु स्पार्ह तदा भर।।

-ऋ. 8/45/41; साम. उ. 4/1/1; अथर्व. 20/43/2

ऋषिः-काण्वः त्रिशोकः।। देवता-इन्द्रः।। छन्दः-गायत्री।।

विनय- हे परमेश्वर्यवाले इन्द्र! तुम्हारा नाना प्रकार का ऐश्वर्य इस संसार में भरा पड़ा है, परन्तु तुम्हारे इन ऐश्वर्यों में से जिस प्रकार के ऐश्वर्य की मुझे स्पृहा है, जिस प्रकार के ऐश्वर्य को मैं चाहता हूं, वह तो ऐसा है जो संसार के वीर, दृढ़ (वीड्) पुरुषों में दिखाई देता है और जो स्थिर तथा विमर्शशील पुरुषों में रहता है। प्रायः लोग रुपये-पैसे को ऐश्वर्य समझते हैं, परन्तु वास्तव में वह ऐश्वर्य नहीं है। रुपये-पैसे तथा अन्य सम्पति के पदार्थों का ऐसश्वर्य होना या न होना मनुष्य पर आश्रित है, मनुष्य की शक्ति पर आश्रित है, अतः मनुष्य तथा मनुष्य का सामर्थ्य ही वास्तविक धन (ऐश्वर्य) है। गीता में जो 'अभय', 'सत्वसंशुद्धि' आदि सद्गुणों को दिव्य सम्पति कहा है वह सत्य है, वही सच्ची सम्पत् है। शम, दम, तितिक्षा आदि छह गुण इसीलिए 'षट् सम्पति' नाम से जगत् में प्रसिद्ध हैं। हे इन्द्र! मुझे तो यह ही सच्ची सम्पत् चाहिए। संसार रुपये-पैसे के धनियों को देखकर मुझे उनकी-सी अवस्था के प्रति तनिक भी आकर्षण नहीं होता, परन्तु वीरों की वीरता, अदम्य उत्साह, तेज और दृढ़ता पर मैं मोहित हूं। जो चिरकाल तक स्थिरता से, श्रद्धापूर्वक उनका भक्त बना लेता है; और जब मैं उन पुरुषों को देखता हूं जो विचारपूर्वक सब कार्य करते हैं, पेचीदा अवस्था आने पर भी जिन्हें अपने कर्त्तव्य का निर्णय करने में तनिक देर नहीं लगती, तो मैं यही चाहता हूं कि यह विमर्श-क्षमता मुझमें भी आ जाए। जिनके पास ये तीन गुण नहीं होते उनके पास तो रुपया-पैसा भी नहीं ठहरता; यदि ठहरता भी है तो या तो वह शक्ति रूप नहीं होता या बुरी शक्ति बन जाता है। क्या हम प्रतिदिन नहीं देखते कि कायरता के कारण, अस्थिरता के कारण, नासमझी के कारण सब कमाया हुआ बड़ा भारी धन एक दिन में बर्बाद हो जाता है या होता हुआ भी बेकार सिद्ध होता है। इसलिए मेरे पास तो यदि भूमि, घर आदि कुछ सामान न हो, कपड़ा-लता भी न हो, एक कौड़ी तक न हो, परन्तु यदि मुझमें वीरता, अजेय दृढ़ता हो और लगातार देर तक सतत काम करने की शक्ति एवं लगन हो तथा मुझमें विचारशीलता हो, तो मैं हे प्रभो! अपने को महाधनी समझूंगा और संसार में आत्माभिमान के साथ सिर ऊंचा करके फिरूंगा। इसलिए हे नाथ! मुझ तो तुम दृढ़ता, स्थिरता और विमर्शशीलता प्रदान करना; मैं यही मांगता हूं, आपसे यही ऐश्वर्य पाना चाहता हूं।

शब्दार्थः- इन्द्र-हे परमेश्वर! यत्-जो धन तूने वीडो-दृढ़, न दबनेवाले पुरुष में यत् स्थिरे-जो धन स्थिर रहने वाले में यत् पर्शाने-और जो धन विचारशील पुरुष में पराभृतम्-रखा है तत्-वह स्पार्हम्- स्पृहणीय, चाहने योग वसु-धन आभर-मुझे प्राप्त करा।

साभार : वैदिक विनय

पुस्तक प्राप्ति के लिए वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय

आतंक के गढ़ में आतंक

उत्तर पश्चिमी पाकिस्तान में बुधवार को कलाशनिकोव रायफल से लैस तालिबान के आत्मघाती हमलावर एक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय में घुस गए और अंधाधुंध गोलीबारी की, जिससे कम से कम 21 लोग मारे गए; जबकि सुरक्षा बलों की जवाबी कार्यवाही में तहरीक ए तालिबान के चार हमलावर ढेर हो गए। यह हमला 2014 में पेशावर के एक सैनिक स्कूल पर हुए नृशंस हमले की याद दिलाता है। हो सकता है अब तक कब्रों पर पानी छिड़ककर फूल चढा दिए हों! कॉलेज के प्रांगण में पड़े खून के छींटे साफ कर दिए गये हों किन्तु अब पाकिस्तान की सत्ता जब उनकी दुआ के लिए आसमान में हाथ उठाये तो एक बार अपने हाथों को जरुर देख ले कि कहीं उन पर भी खून के दाग तो नहीं हैं।

इस मौसम में जहाँ माँ अपने बच्चों को सर्दी ना लग जाये कहकर डरती है वहीं कोई एक धार्मिक पुस्तक का हवाला देकर इन बच्चों की हत्या कर जाये तो उस माँ पर क्या बीतती होगी? यही न कि इनका मजहब इन्हें यही क्यों सिखाता है? क्यूँ मजहबी मदरसों में पढ़कर यह हाथ मानवता की सेवा-भलाई करने के बजाय अधिकतर लोग बन्दूक लेकर सड़कों पर क्यों निकल जाते हैं? क्या अब भी पाकिस्तान की आवाम के लिए पाकिस्तान में फलता-फूलता आतंक भारत व अन्य देशों का दुश्मन है? अब भी समय है पाकिस्तान की आवाम को अपने शासकों से पूछना चाहिए कि आखिर अच्छे तालिबान बुरे तालिबान के नाम पर यह सांप सीढ़ का खेल कब तक चलता रहेगा! आखिर इन दरिंदों से सख्ती से क्यों नहीं निपटा जाता?

पिछले साल नवम्बर माह में पाकिस्तान के विदेश मंत्री सरताज अजीज ने यह कहकर सनसनी फैला दी थी कि अमेरिका और बाहरी देशों के साथ लड़ रहे अच्छे तालिबानी पाकिस्तान का सिर दर्द नहीं है शायद तभी अफगानिस्तान और भारत विरोधी आतंकवादी खुले घूम रहे हैं हाफिज सईद और हक्कानी नेटवर्क को पाकिस्तान की सेना सुरक्षा प्रदान कर रही है। इस घटना के बाद पाकिस्तान में कई संगठन तो घटना की निंदा से भी कतरा रहे हैं।

पेशावर यूनिवर्सिटी के एक स्टूडेंट मंजूर खान ने कहा, हमें आतंकवाद पर दया नहीं दिखानी चाहिए। हमें उनसे डरना नहीं, बल्कि लड़ना है। उनसे डरकर हम पढ़ना छोड़ नहीं देंगे। दरअसल मजहबी शिक्षा दीक्षा के पक्षधर और किसी भी देश में आधुनिक शिक्षा प्रणाली के विरोधी आतंकी संगठन जानते हैं यदि मुस्लिम समाज मजहबी शिक्षा के अतिरिक्त कुछ और पढ़ेगा तो यह आतंक का तेजाब बनना बंद हो जायेगा। खुदा का खौफ और कुछ आयतों से आखिर कब तक यह खेल जारी रहेगा? प्रश्न एक नहीं अनेक हैं। इन दरिंदो के आतंक के कारोबार को धन कौन देता है? इस्लाम का रखवाला मुस्लिम जगत? यदि इस्लाम का रखवाला मुस्लिम जगत इन लोगों को धन प्रदान करता है तो फिर खुद को अमन पसंद क्यों कहते हैं?

हर एक घटना के बाद कार्यवाही और निंदा जैसे शब्द सुनने को मिलते हैं किन्तु हर बार कार्यवाही के नाम पर लीपापोती कर दी जाती है। आखिर क्यूँ और कैसे! एक लादेन के मरते ही हजारों लादेन खड़े हो जाते हैं? क्यों नहीं मुस्लिम जगत का पढ़ा लिखा धड़ा इस हजार वर्षों पूर्व की परम्पराओं को उखाड़ फेंकता? हत्या कहीं भी हो और किसी की भी हो, हम निंदा करते हैं। हम सामाजिक सदभाव प्रेम संवेदना के पक्षधर हैं किन्तु आज मुस्लिम समाज को खुद से प्रश्न पूछना चाहिए कि क्या मदरसों में जिसे आप लोग अमन की पुस्तक कुरान कहते हो नहीं पढाई जाती? यदि पढाई जाती है तो फिर इन मदरसों से बुल्ले शाह, दाराशिकोह, अब्दुल कलाम जैसे लोग क्यों नहीं निकलते? क्यों हर बार इनसे अधिकतर लादेन, फजुल्लाह, अजहर मसूद और बगदादी जैसे लोग निकलते हैं? धार्मिक कट्टरता के खात्मे को लेकर मुस्लिम देशों को मुस्लिम बहुल देश तजाकिस्तान से सीख लेनी चाहिए जहाँ एक दिन में करीब तेरह हजार लोगों की दाढ़ी काटी गयी, 17 हजार लड़कियों को बुर्के से आजाद किया गया और मुस्लिम पहनावे की सभी दुकान बैन कर दी गयी ताकि धार्मिक कट्टरता ना पनपने पाए। अब पाकिस्तान सरकार को भी इसी तरह समझना चाहिए और बिना भेदभाव के इन पर कार्यवाही करनी चाहिए ताकि ममता की गोद में खिलने वाले फूल मानवता के सूरज की सुनहरी धूप देख सके।

-सम्पादकीय

प्रेरक प्रसंग

हे धर्म वेद से पिता मुझे सदा इस तरह का प्यार दे

आ मुलतान की भूमि ने आर्य समाज को बड़े-बड़े रत्न दिये हैं। श्री पंडित गुरुदतजी विद्यार्थी, पंडित लोकनाथ तर्कवाचस्पति डॉक्टर बालकृष्णजी, स्वामी धर्मानन्द (पंडित धर्मदेवजी विद्यामार्तमड), पंडित त्रिलोकचन्द्रजी शास्त्री- ये सब मुलतानक्षेत्र के ही थे। आरंभिक युग के आर्य नेताओं में महाशय जयचन्द्रजी भी बड़े नामी तथा पूज्य पुरुष थे। वे भी इसी धरती पर जन्मे थे। वे तार-विभाग में चालीस रुपये मासिक लेते थे। सम्भव है वेतन-वृद्धि से अधिक मिलने लगा हो।

उन्हें दिन-रात आर्य समाज का ही ध्यान रहता था। वे आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री चुने गये। सभा के साधन इतने ही थे कि श्री मास्टर आत्मारामजी अमृतसरी के घर पर एक चार आने की कापी में सभा का सारा कार्यालय होता था। एक बार मास्टरजी ने मित्रों को दिखाया कि सभा के पास केवल बारह आने हैं। श्री जयचन्द्रजी ने चौधरी रामभजनदत्त, मास्टर आत्मारामजी आदि के साथ मिलकर समाजों में प्रचार के लिए शिष्टमंडल भेजे। सभा की वेद प्रचार निधि के लिए धन इकट्ठा किया। सभा को सुदृढ़ किया। जयचन्द्रजी सभा कार्यालय में पत्र लिखने में लगे रहते। रजिस्टरों का सारा कार्य स्वयं करते। इस कार्य में उनका कोई सहायक नहीं होता था।

पंडित लेखरामजी के बलिदान के पश्चात् प्रचार की मांग और बढ़ी तो जयचन्द्रजी ने स्वयं स्वाध्याय तथा लेखनी का कार्य आरम्भ किया। वक्ता भी बन गये। आर्य समाज की सेवा करने वाले अथक धर्मवीर को निमोनिया हो गया। इस रोग में अचेत अवस्था में लोगों ने उन्हें ऐसे बोलते देखा जैसे वे आर्य समाज मंदिर में प्रार्थना करवा रहे हों अथवा उपदेश दे रहे हों। श्री पंडित विष्णुदत्त जी ने उन्हें आर्य समाज के 'शहीद' की संज्ञा दी।

-तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36=16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30=8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6

Ph. :011-43781191, 09650622778

E-mail : aspt.india@gmail.com

वीरो अपना देश बचाओ

आर्यवर्त के वीर सपूतो, मिलजुल करके कदम बढ़ाओ।
महानाश की ज्वालाओं से, अपना प्यारा देश बचाओ।।

ऋषियों-मुनियों के भारत में, पापाचार गया बढ़ भारी।
डाकू, गुण्डे, चोर सुखी हैं, मस्ती में हैं मांसाहारी।।
शासक दल बन गया शराबी, आज दुखी है वेदाचारी।
रक्षक हैं, भारत में भक्षक, जागो! भारत के बलधारी।।

मानवता का पाठ पढ़ाओ, पावन वैदिक धर्म निभाओ।
महानाश की ज्वालाओं से, अपना प्यारा देश बचाओ।।

काट-काट बिरवे गुलाब के, यहां नाग फन सींचा जाता।
डाल-डाल पर बैटे उल्लू, देख-देख माली हर्षाता।।
खाओ-पीओ, मौज उड़ाओ, युवा वर्ग है निश-दिन गाता।
अपमानित हैं यहां देवियां, सिसक रही है भारत माता।।

राम, भरत के वीर सपूतो! दुखी जनों के कष्ट मिटाओ।
महानाश की ज्वालाओं से, अपना प्यारा देश बचाओ।।

उग्रवाद, आतंकवाद ने, देश हमारा घेर लिया है।
नेता हैं कुर्सी के भूखे, पाप जिन्होंने बढ़ा दिया है।।
देश-धर्म का ध्यान नहीं है, जिनका पत्थर बना दिया है।
वैदिक पथ तज दिया खलों ने, भारत को बर्बाद किया है।।

स्वामी दयानन्द बन जाओ, जग में नाम अमर कर जाओ।
महानाश की ज्वालाओं से, अपना प्यारा देश बचाओ।।

गौ ब्राह्मण की सेवा करना, ऋषियों ने है धर्म बताया।
गौ माता है खान गुणों की, वेद-शास्त्रों में दर्शाया।।
विद्वानों की शिक्षाओं को, दम्भी लोगों ने बिसराया।
नक्ल विदेशों की कर-करके, अपना जीवन नर्क बनाया।।

गौ हत्या को बन्द कराओ, वीरो! श्री कृष्ण बन जाओ।
महानाश की ज्वालाओं से, अपना प्यारा देश बचाओ।।

याद रखो! जो देश -धर्म की, श्रद्धा से करते हैं सेवा।
वही भाग्यशाली पाते हैं सुनों! सुयश की पावन मेवा।।
डूब रही है नाव धर्म की, पार लगाओ बनकर खेवा।
अगर न जागे नहीं मिलेगा, नाम तुम्हारा जग में लेवा।।

'नन्दलाल' है भला इसी में, जितना हो शुभ कर्म कमाओ।
महानाश की ज्वालाओं से, अपना प्यारा देश बचाओ।। -पं. नन्दलाल 'निर्भय' पलवल

विश्व पुस्तक मेला – 2016

सत्यार्थ प्रकाश में छूट देने हेतु दान देने वालों की सूची

गतांक से आगे

59.	चेतन आर्य	2000/-
60.	आर्य समाज विवेक विहार	5000/-
61.	जितेन्द्र खरबन्दा	500/-
62.	ऊषा चुघ	1000/-
63.	आर्य समाज सागरपुर	2100/-
64.	अंजलि कपूर	10000/-
65.	आर्य समाज रोहिणी से. 7	5000/-
66.	अनिल कुमार गुप्ता	2000/-
67.	अनिल मलिक एण्ड कम्पनी	1200/-
68.	राम भज मदान एण्ड रेनू मल्होत्रा एण्ड सुशीला मदान	5000/-
69.	ईश्वर चन्द्र खन्ना	1000/
70.	सुखराम जी	1000/-
71.	सतीश चावला	1000/-
72.	ओम प्रकाश हंस	300/-
73.	दलीप सिंह सैनी	500/-
74.	प्रेम बजाज	500/-
75.	तलवार परिवार	5000/-
76.	वेदव्रत	500/-
77.	आर्य समाज आदर्श नगर	5100/-
78.	आर्य समाज आशापार्क जेल रोड	4000/-

खेद प्रकाश

आर्य संदेश अंक 11 दिनांक 18 से 24 जनवरी 2016 में प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश में छूट देने हेतु दान देने वालों की सूची में श्री विवेक अग्रवाल रु. 10000 की दान राशि सत्यार्थ प्रकाश हेतु दान नहीं दी गयी थी है। -**सम्पादक**

बोध कथा

मैं मूर्ति भंजक नहीं हूं

एक स्थान (सम्भवत: बरेली) में महर्षि दयानन्द जी के प्रवास का कई दिनों तक कार्यक्रम था। वे प्रत्येक दिन एक-एक विषय पर प्रवचन किया करते थे। मंडन केवल वेदों का करते थे किन्तु खंडन ईसाई-मुस्लिम मतों के अतिरिक्त हिन्दुओं के विभिन्न सम्प्रदायों और विशेषकर उनमें प्रचलित मूर्ति पूजा का भी खंडन उनका केन्द्रीय विषय रहता था।

बाईबल और कुरान के खंडन के कारण ईसाई और इस्लाम दोनों मजहबों में भयंकर आक्रोश था। किन्तु नगर की बहुसंख्यक जनता हिन्दू होने के कारण उनका आक्रोश विस्फोटक रूप ग्रहण नहीं कर पाया। तब वे धूर्तता पूर्ण उचित विचार कर अंग्रेज कलैक्टर और उसके अधीन एक मुस्लिम अधिकारी को लेकर स्वामी जी के पास जा पहुंचे। प्रवचन के पश्चात् उवके पास पहुंचकर धीरे से कहा, ''हम आपसे एकांत में मिलना चाहते हैं।''

स्वामीजी ने उत्तर दिया, ''आप हमसे एकांत में क्यों मिलना चाहते हैं?''

मुस्लिम दुभाषिए ने कलैक्टर का आशय समझाते हुए कहा कि विषय अत्यन्त गोपनीय है।''

स्वामी जी- ''विषय अत्यन्त गोपनीय है। संन्यासी के सामने गोपनीय विषय, नहीं-नहीं।

अत्यन्त अनुनय विनय करने पर स्वामी जी ने कहा,''चलो गोपनीय विषय भी जान लेंगे। आप प्रात: चार बजे आ जाइए। कोठी के द्वारपाल से कह देंगे। यह आपको लेकर हमारे पास आ जाएगा।

प्रात: काल चार बजे पौष (जनवरी) मास, भयंकर शीत,सुनकर कांप गए परन्तु मरता क्या न करता। स्वीकार कके चले गए।

प्रात:काल लम्बे बूट जूते-मोजे, चद्दर, हैट, टाई मफलर, ऊनी शाल में लिपटे-लिपटाए दोनों जन हिलते-कांपते दस्तानों में कैद हाथ बगल में दबाए जा पहुंचे। द्वारपाल लालटेन लेकर उन्हें अन्दर ले गया। देखा कि एक खुले पार्क में, बिना किसी बिछावन के एक तख्त पर,केवल एक कोपीन में बैठे हुए स्वामी जी कुछ आसनादि कर रहे हैं। उनके शरीर से पसीना निरन्तर बह रहा है। पास में एक छोटा हंडा जल रहा है और एक मोटा सा डंडा रखा हुआ है। द्वारपाल ने अंदर से दो कुर्सियां लाकर रख दीं। वे बैठ गये। कुछ देर पश्चात् अपना पसीना पोछते हुए स्वामी जी बोले,''कहो, क्या गोपनीय वार्ता है?''

कलैक्टर का निर्देश पाकर दुभाषिया बोला, ''स्वामी जी आप मूर्ति पूजा का खंडन करते हैं। हमारे ईसाई और मुस्लिम समाज में भी मूर्ति पूजा नहीं है। केवल भाषण-प्रवचन लैक्चर से यह पाप मिटने वाले नहीं है। इसके लिए कुछ और भी करना होगा।''

स्वामी जी - ''क्या करना होगा?''

दुभाषिया - ''आप बुद्धिमान हैं।, आप ही विचारिए।''

स्वामी जी - ''आप तो विचार कर आए हैं।''

दुभाषिया - ''जी-जी हां, निश्चित रूपेण।''

स्वामी जी - ''तो कहिए।''

दुभाषिया - ''आपके आर्य समाज के भक्त समर्थक-कार्यकर्ता मंदिरों पर आक्रमण करें। मूर्तियों को तोड़ें। यदि मंदिर वाले लोग भारी पड़ते दिखें तो हमारी ब्रिटिश पुलिस गुंडागर्दी दबाने के नाम पर उन पर लाठी, गोली आंसू गैस आदि के प्रयोग से उनका दमन कर देगी। हमारे मुस्लिम भाई ऐसे अवसर पर टोले-मुहल्लों से निकलने वाली भीड़ का मार्ग हर प्रकार से रोकेंगे।

स्वामी जी - ठीक है, हम समझ गये। तुम हिन्दुओं के द्वारा हिन्दुओं का दमन कराकर, अंग्रेजों द्वारा पालित मुगलशाही का परचम भारतवर्ष में फहराना चाहते हो। तो सुन लो, यदि हमें यह सूचना मिली कि कोई-किसी मंदिर पर आक्रमण करने जा रहा है तो मंदिर के अर्चक तो जब निकलेंगे तब निकलेंगे, मैं उनकी प्रतीक्षा न करके स्वयं आगे बढ़कर अपने इस दण्ड से उन विधर्मियों का कपाल भंजन कर डालूंगा।

दुभाषिया - तो आपका मूर्ति पूजा का खंडन केवल एक पाखंड है?

स्वामी जी - पाखंडी तो तुम हो जो कब्रे पूजते हैं। जिनके चर्चों में गोद में ईशु को लिए मरियम के चित्रों-मूर्तियों-क्रासों के सामने मोमबत्तियां जलती हैं। फूलों के गुच्छे रखे जाते हैं। इस दयानंद के जीते जी यह देशद्रोह का दुष्कृत्य नहीं हो सकेगा। यहां शिया-सुन्नी अहमदी अथवा कैथालिक-प्रोटेस्टेंट की भांति जूतमफाग न हुआ है और न होने दूंगा। मूर्ति पूजक इस देश के महापुरुषों की मूर्तियों को ही तो लिए बैठे हैं। वे उन्हें ईश्वर मानते हैं। मैं उन्हें महापुरुष मानता हूं और सुन लो, स्वामी दयानंद मूर्ति पूजक नहीं है किन्तु मूर्ति भंजक न है, न हो सकता है और न किसी को इस प्रकार का कुकृत्य करते देखकर कदापि मौन रहेगा। हमारे मंदिरों का विध्वंस करने वाले गौरी-गजनवी-औरंगजेब-सेंट जेव्हीयर सहित देश के शत्रु थे और आर्य समाज सदैव उन आततायियों और उनके समर्थकों को शत्रु ही मानता रहेगा।

''अच्छा है,यह तुमने यहां आकर कहा हे। यदि प्रवचन स्थल पर कहते तो मैं वहां बैठे हुए श्रोताओं को रोकता ही रह जाता परन्तु तुम्हारी क्या दशा होती, मैं नहीं जानता। तुम कुटिल के साथ बुद्धिमान भी हो जो यहां एकांत में कहने चले आये। अब यहां से तुरंत निकल जाओ। यदि यहां के माली और द्वारपाल को भी तुम्हारे कथन की भनक लग गई तो तुम्हें आठ-आठ पैरों पर भिजवाना पड़ेगा। -**कीर्ति शर्मा**

तीन दिवसीय आवासीय पुरोहित एवम् उपदेशक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1, नई दिल्ली के तत्वावधान में 16-18 जनवरी 2016 तक तीन दिवसीय आवासीय पुरोहित एवम् उपदेशक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में दिल्ली के अतिरिक्त उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, बिहार आदि से 35 प्रतिभागियों ने भाग लिया। शिविर के समापन समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के यशस्वी प्रधान वयोवृद्ध आर्य नेता व प्रसिद्ध उद्योगपति एम.डी.एच. के सर्वेसर्वा महाशय धर्मपाल जी ने कहा कि आर्य समाजों के लिए सिद्धान्तनिष्ठ व प्रशिक्षित पुरोहितों व उपदेशकों की आवश्यकता है जिन्हें प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से परिपक्व बनाया जा सकता है। समापन सत्र में स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी सम्पूर्णानन्द जी, महाशय धर्मपाल जी, श्री योगेश मुंजाल जी, एम.डी.एच. से श्री राजेन्द्र जी व चारों आचार्यों का आशीर्वाद व समापन सन्देश प्राप्त हुआ। समापन अधिवेशन का संचालन समाज के मन्त्री श्री राजेन्द्र वर्मा ने किया।

एक ग्राम ऐसा भी.... ग्राम बड़ेपन्धी में मकर संक्रांति पर वेद प्रचार कार्यक्रम की रात्रि 12 बजे तक मची रहती है धूम

ग्राम बड़ेपन्धी जिला रायगढ़ में स्थिति एक आर्य समाजी का घर जिसने पूरे गांव को आर्य समाजी बनाने में महत्व पूर्ण भूमिका निभाई।

जिला रायगढ़ के ग्राम बड़ेपन्धी में मकरसंक्रांति के उपलक्ष्य में विगत 22 वर्षो से वेद प्रचार कार्यक्रम बड़े जोर-शोर से मनाया जाता है यह कार्यक्रम सुबह से प्रारम्भ होकर रात्रि 12 बजे तक चलता है जिसमें ग्राम के बुजुगों के साथ-साथ महिलाएं, युवा व बच्चे पूरी लगन और उत्साह के साथ कार्यक्रम में भाग लेते हैं लगभग सभी ग्रामवासी एक सूत्र में बंधकर इस कार्यक्रम को सम्पन्न कराने में अपनी-अपनी भूमिका अदा करते हैं। इस बार मकर संक्रांति के अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य ने भी ग्राम बड़ेपन्धी में आयोजित वेद प्रचार कार्यक्रम में शामिल होकर रात्रि 12 बजे तक सभी ग्रामवासियों के साथ मिलकर कार्यक्रम का आनन्द प्राप्त किया। इस बार मकर संक्रांति के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा बड़ेपंधी, पुड़ागढ एवं सिरपूर को श्रीमती हरिप्रिया चतुर्भुज आर्य रानीसागर द्वारा 3 सेट वेद ग्रंथ भेंट किये गये। इस वर्ष ग्रामवासियों द्वारा संकल्प लिया हुआ है कि गांव के अन्दर कोई भी व्यक्ति शराब पीकर गांव में प्रवेश नहीं कर सकता यहां तक कि गांव के अन्दर शराब बेचना भी प्रतिबन्धित किया जाएगा। इसी प्रकार गांव के अन्दर जुआ खेलना भी प्रतिबन्धित किया जाएगा। गांव की गलियों और सड़कों को समस्त ग्रामवासियों एकजुट होकर चौड़ा करेंगे। समस्त ग्रामवासियों ने गांव की स्वच्छता के लिए जनवरी 2016 के अन्त तक सभी घरों में शौचालय बनवाने का भी निर्णय लिया हुआ है।

गुरुकुल के मुख्य द्वार पर छत्तीसगढ़ सभा के प्रधान आचार्य आशुदेव एवं मंत्री श्री दीनानाथ जी के साथ दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी।

महर्षि दयानन्द निर्वाण न्यास भिनायकोठी एम.डी.एच. परिसर अजमेर के नवीनी करण की योजना की प्रगति को देखने पहुंचे एम.डी.एच. से श्री अनिल अरोड़ा जी एवं सभा महामंत्री श्री विनय आर्य साथ में न्यास के कार्यकारी प्रधान बहीती जी मंत्री सोम रत्न आर्य एवं अन्य।

नये स्थान पर आर्य समाज डी.सी.एम. रेलवे कालोनी दिल्ली का पुनर्निर्माण आरंभ
आर्यजनों से सहयोग की अपील

आपको विदित ही होगा कि गत दिनों सरकार द्वारा आर्य समाज मंदिर डी.सी.एम. रेलवे कॉलोनी निकट बाड़ा हिन्दू राव, दिल्ली-6 बिना पूर्व सूचना के गिरा दिया गया था। सरकार द्वारा पुराने भवन के निकट ही दूसरा स्थान मंदिर के लिए दिया गया है। जिस पर निर्माण कार्य चल रहा है। इस मंदिर निर्माण कार्य में आप सबका सहयोग सादर अपेक्षित है। अत: आर्य समाज डी.सी.एम. दिल्ली के भवन निर्माण हेतु समस्त आर्य समाजों, दान वीरों, उद्योगपतियों एवं आर्यजनों से अनुरोध है कि अधिक से अधिक दान देकर पुण्य के भागी बने। आपके द्वारा दिया गया दान धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर छूट प्राप्त है।

आप अपनी दान राशि 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनी आर्डर द्वारा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली 110001 के पते पर भेजकर सहयोग प्रदान करें।

निवेदक:

धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	विद्यामित्र ठुकराल
प्रधान	महामंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज बिरला लाइन्स का 86 वां स्थापना दिवस

आर्यसमाज बिरला लाइन्स कमला नगर दिल्ली-7 के 86 वें स्थापना दिवस पर दिनांक शनिवार 30 जनवरी 2016 को सायं 6: 30 बजे से रात 8: 30 तक 'आर्य भजन संध्या' कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य कुंवरपाल शास्त्री व भजनोपदेशक देव आचार्य होंगे।-**मंत्री**

28 जनवरी जन्मोत्सव पर विशेष

हिन्दू केसरी लाला लाजपत राय

लुधियाना जिले के जगराव कस्बे के निवासी लाला राधाकृष्ण की ससुराल जिला फरीदकोट ग्राम दुढ़िके (पंजाब) में 28 जनवरी 1865 को लाला लाजपत राय जी का जन्म हुआ। लाला लाजपत राय की प्राथमिक शिक्षा 5वीं कक्षा से आरम्भ हुई। वर्ष 1880 में उन्होंने कलकत्ता तथा पंजाब विश्वविद्यालय से एंट्रेंस की परीक्षा एक ही वर्ष में पास की और आगे पढ़ने के लिए लाहौर चले गये। वहां के गवर्मेंट कॉलेज में प्रविष्ट हुए और 1882 में एम. ए. की परीक्षा मुख्तारी की परीक्षा एक साथ पास की।

उन समय पंजाब में आर्य समाज का प्रचार-प्रसार जोरों पर था। आर्य समाज नये विचारों और बलिदान की भावनाओं का प्रतीक बना हुआ था। पंजाब के सब विचारक और होनहार युवक आर्य समाज की ओर खिंचे चले आ रहे थे। लाला लाजपत राय भी इस बात से अछूते नहीं रहे। मात्र 17 वर्ष की आयु में ही वह आर्य समाज लाहौर के सदस्य बन गये। आर्य समाजों में उनके प्रभावशाली व्याख्यान होने लगे। 18 वर्ष की आयु में लाला जी ने आर्य समाज अम्बाला के वार्षिकोत्सव में जो व्याख्यान दिया वह उनका ऐतिहासिक भाषण बन गया। उन्होंने कहा ''आपमें से प्रत्येक को कम से कम एक भारतीय भाषा में पूर्ण योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। अच्छा हो वह भाषा हिन्दी हो। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि प्रतिदिन हिन्दी में अपनी डायरी लिखा करें।''

लाहौर आने पर वे आर्य समाज के अतिरिक्त राजनैतिक आन्दोलन के साथ भी जुड़ गये। वर्ष 1888 में पहली बार कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए जिसकी अध्यक्षता मि. जार्ज यूल ने की थी। वर्ष 1906 में आप गोपाल कृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस के एक शिष्ट मण्डल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गये और फिर वहीं से अमेरिका चले गये। आपने कई बार विदेश यात्राएं की और वहां रहकर पश्चिमी देशों के समक्ष भारत के राजनीतिक परिस्थिति की वास्तविकता से वहां की जनता को परिचित करवाया तथा उन्हें भारत में चल रहे स्वाधीनता आन्दोलन की जानकारी दी तथा न्यायोचित मांग के प्रति सहयोग और समर्थन का प्रस्ताव रखा।

वर्ष 1912 में अछूतोद्धार के लिए एक सम्मेलन गुरुकुल कांगड़ी के महोत्सव पर बुलाया गया, जिसमें आपको सभापति बनाया गया। आपने अपने पास से उस समय महोत्सव में एक बड़ी धनराशि (लगभग 40 हजार रुपये) से सहयोग प्रदान किया और स्थान-स्थान पर अछूत समझे जाने वाले भाई-बहनों के लिए पाठशालायें, शिक्षण संस्थायें खुलवायीं उनके साथ सामूहिक भोजन कर सदियों से चली आ रही पुरानी छुआछूत की परम्परा को तोड़ा।

आपने वर्ष 1921 में एक अभूतपूर्व कार्य किया वह था लोक सेवा मण्डल की स्थापना। इस मण्डल का उद्घाटन महात्मा गांधी ने किया। इस स्थापित मण्डल का मुख्य उद्देश्य निःस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करना था। इस मण्डल मेलो सदस्य प्रविष्ट होता था। उसके जीवन निर्वाह के लिए अति आवश्यक और सीमित मात्रा में खर्च दिया जाता था।

वर्ष 1928 में भारत की राजनैतिक स्थिति का आंकलन करने के लिए इंग्लैण्ड से साईमन कमीशन भारत भेजा गया था। इस कमीशन में भारत का एक भी सदस्य शामिल नहीं था। भारत के नेताओं की इस प्रकार अवहेलना किये जाने से इसे राष्ट्र का अपमान समझा गया। सारे देश में उसका काले झंडों से स्वागत किया गया। भारत भूमि साईमन कमीशन वापस जाओ के क्रांतिकारी नारों से गूंज उठी थी। तत्पश्चात् 30 अक्टूबर को कमीशन लाहौर आया, काले झंड़ों से इसका स्वागत करने के लिए हिन्दू केसरी लाला लाजपत राय के नेतृत्व में एक विशाल जुलूस निकाला गया। इस शान्ति जुलूस को तितर-बितर करने के लिए पुलिस कप्तान स्कॉट के नेतृत्व में पुलिस ने निहत्थे लोगों पर लाठी-चार्ज किय। पुलिस का एक सार्जेन्ट साण्डर्स स्वयं लाठी लेकर लाला जी पर टूट पड़ा। जिससे उन्हें छाती और सिर पर अनेक चोटें आयीं लेकिन वे शान्तिपूर्वक इन प्रहारों को सहन करते रहे। घायलावस्था में उन्हें अस्पताल ले जाया गया। लाहौर वासियों ने हजारों की संख्यामें अस्पताल को घेर लिय। चिकित्सकों के मना करने पर भी लाल जी जनता से मिलने अस्पताल से बाहर निकले और उन्होंने कहा आज मेरे ऊपर किये गया लाठी का एक-एक प्रहार अंग्रेजी साम्राज्य के कफन की कील बनेगा। लाला जी का वृद्ध शरीर इतनी चोटों के आघात को सहन न कर सका और छाती का दर्द दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही गया और अन्ततः 17 नवम्बर प्रातः 7 बजे लाला जी वीर गति को प्राप्त हुए।

...18 वर्ष की आयु में लाला जी ने आर्य समाज अम्बाला के वार्षिकोत्सव में जो व्याख्यान दिया वह उनका ऐतिहासिक भाषण बन गया। उन्होंने कहा ''आप में से प्रत्येक को कम से कम एक भारतीय भाषा में पूर्ण योग्यता प्राप्त करनी चाहिए। अच्छा हो वह भाषा हिन्दी हो।''...

शोक समाचार

श्री डी.के. गर्ग को पितृ शोक

आर्य समाज के नेता एवं ईशान इंसीट्यूट के चेयरमैन श्री डी.के. गर्ग के पूज्य पिता श्री प्रेम चन्द्र गर्ग का दिनांक 25 जनवरी 2016 को निधन हो गया है। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गये हैं। शोक सभा उनके निवास स्थान पर दिनांक 31 जनवरी 2016 को दनकौर ग्रेटर नोएडा में सम्पन्न होगी।

श्रीमती वीणा महेश अग्रवाल दिवंगत

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के वरिष्ठ उपप्रधान श्री अग्रवाल सुरेश चन्द्र के लघुभ्राता श्री महेश चन्द्र अग्रवाल की धर्मपत्नी श्रीमती वीणा महेश अग्रवाल का दिनांक 19 जनवरी 2016 को 60 वर्ष की अवस्था में मुम्बई में देहावसान हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गयी हैं।

श्री रवि देव गुप्ता जी को मातृ शोक

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल एवं आर्य समाज सफदरजंग इन्कलेव के प्रधान श्री रवि देव गुप्ता जी की माताजी श्रीमती प्रेमवती आर्य जी का दिनांक 20 जनवरी 2016 को 97 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। वे अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़ गयीं। दिनांक 24 जनवरी 2016 को आर्य समाज डिफेन्स कॉलोनी में एक शोक सभा आयोजित हुई जिसमें दिल्ली की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने अपने-अपने श्रद्धासुमन अर्पित किये।

मास्टर सोमनाथ आर्य दिवंगत

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव के अधिकारी, आर्य समाज अर्जुन नगर के पदाधिकारी एवं प्रांतीय सभा गुड़गांव के अधिकारी रहे मास्टर सोमनाथ आर्य जी का दिनांक 2016 को उनके निवास स्थान गुड़गांव में निधन हो गया वे लगभग 70 वर्ष के थे। मास्टर सोमनाथ ने अपना सम्पूर्ण जीवन आर्य समाज को समर्पित किया हुआ था आपके जाने से आर्य जगत को एक अपूर्णीय क्षति हुई है। परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना है कि वह दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करे।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य संदेश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

''सत्यार्थ प्रकाश'' व आर्यसमाज के ''वैदिक विद्वानों'' की प्रेरणा से बना आर्यसमाजी

मेरे गाँव- हिम्मतपुर काकामई, जिला-एटा, उत्तर प्रदेश में आर्यसमाज का बहुत प्रभाव है। वैदिक विद्वान आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी जब दिल्ली से समय-समय पर गाँव जाया करते थे तब वे अपने साथ किसी न किसी आर्यसमाज के भजनोपदेशक व विद्वान जैसे कि पं. नरेश दत्त आर्य जी, पं. नरदेव आर्य जी, पं.सहदेव बेधड़क जी, आचार्य डॉ.वागीश शर्मा जी आदि विद्वानों को अपने साथ गाँव में लगभग एक सप्ताह तक आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए ले जाया करते थे। इस कारण गाँव में आर्यसमाज का वर्चस्व था। एक बार लगभग सन 2004 की बात है जब पं. नरेश दत्त आर्य जी अपने वेद प्रचार वाहन के साथ गाँव में पधारे तब उन्होंने एक सप्ताह तक पूरे क्षेत्र ने जगह-जगह घूम-घूम कर वेद प्रचार किया व आर्यसमाज के विषय में लोगों को बताया। मैं भी उनको सुनने अपने पूज्य दादा जी स्व. श्री रामजीलाल आर्य जी के साथ जाया करता था और पूरे समय तक उनके भजन व प्रवचन ध्यान लगाकर सुनता था। उसी समय उन्होंने एक प्रसंग के माध्यम से लोगों के सामने अपनी बात रखी थी। उन्होंने कहा कि मैं जब आपके गाँव आ रहा था तो रास्ते में मुझे एक माताजी सड़क पर गड़े हुए पत्थर जिस पर लिखा हुआ था कि 'एटा 30 कि.मी.' पर दूध चढ़ा रही थी तो मैंने पूछा कि! माताजी क्या कर रही हो? तो माताजी ने कहा कि तुम्हें दिखता नहीं है? ये मुझे रोज घर बैठे बताता है कि यहाँ से एटा 30 कि.मी. है। इसलिए मैं इसकी रोज पूजा करती हूँ। इस प्रसंग के माध्यम से उन्होंने लोगों से पत्थर को पूजने की बात को स्वीकार करवाते हुए पत्थर पूजा छोड़ने का आह्वान किया था। मुझे उसी समय से आर्यसमाज के बारे में जानने की इच्छा जागृत हुई और अपने पिताजी आचार्य जयप्रकाश शास्त्री जो कि दिल्ली में आर्यसमाज मॉडल बस्ती में पुरोहित व आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य के कार्यालयाध्यक्ष हैं उनसे आर्यसमाज के

बारे में जानकारियां प्राप्त की और उनके द्वारा दी गई पुस्तक ''सत्यार्थ प्रकाश'' का अध्ययन किया जिससे मैं आर्यसमाज की विचारधारा व अन्य पुस्तकों से स्वामी जी द्वारा राष्ट्र को दिया गया योगदान व समाज सुधार के लिए किये अनेक कार्यों को समझ सका। सन् 2007 से दिल्ली आने के पश्चात् दिल्ली की आर्यसमाजों में होने वाले कार्यक्रमों व आर्यसमाज की अलग-अलग इकाईयों आर्य केन्द्रीय सभा व दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा सभा द्वारा रामलीला मैदान व दिल्ली के अनेक सार्वजनिक स्थलों पर किए जाने वाले कार्यक्रम ऋषि जन्मोत्सव, ऋषि बोधोत्सव, आर्यसमाज स्थापना दिवस, निर्वाण दिवस व स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस में जाने लगा। इन अनेक कार्यक्रमों में जाने के बाद बचपन से मिले आर्यसमाज के संस्कार और भी गहरे हो गये और मैं आज पूर्ण रूप से आर्यसमाज द्वारा संस्कारित हूँ। इसलिए मैं ऋषि दयानन्द जी को नमन करते हुए धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने आर्य समाज बनाकर देश में फैले ऊँच-नीच, पाखंड, भेदभाव व अनेक समाज सुधार के कार्य किए। मैं अपने आप को गौरवान्वित महसूस करता हूँ कि मैं जाति-पाति, छुआ-छूत आदि धार्मिक पाखंडों से दूर हटकर आर्य समाजी बना।

-विवेक आर्य

जो महानुभाव किसी की प्रेरणा/विचारधारा से आर्य समाजी बने उनके लिए आर्य संदेश में एक नया स्तंभ 'मैं आर्य समाजी कैसे बना' प्रारंभ किया गया है। आप भी अपने प्रेरक प्रसंग इस स्तम्भ हेतु अपने फोटो के साथ -'आर्य संदेश, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001' अथवा ईमेल aryasabha@yahoo.com द्वारा हमें भेज सकते हैं। आर्य संदेश के आगामी अंकों में इसे निरंतर प्रकाशित किया जाता रहेगा। -संपादक

Continue from last issue

Glimpses of the Atharva Veda

Creation: Order and Purpose-1

The Creation is orderly and purposeful. This is why seers and scientists proceed with their enquiry into the principles governing the multiparameter Creation. In the complex we call man, there are organs both exterior and interior functioning in a fixed order. The Lord weaves the entire Creation through his divine thread of unified Law. The whole of the Universe is sustained by this great principle and protected by the unflogging device of protection. The Lord alone balances the Creation and holds it in equilibrium.

"Who pierced seven orifices in his head: these two ears, two nostrils, two eyes and the mouth? In whose multiple grandeur, the quadrupeds and the bipeds move on the path of victory?"

who has woven the in-breath in him, and who the outbreath and the diffused breath? Which is the deity that has set the equaliser breath within man?"

कः सप्त खानि वि ततर्द शीर्षणि कर्णाविमौ नासिके चक्षणी मुखम्।

येषां पुरुत्रा विजयस्य मह्मनि चतुष्पादो द्विपदो यन्ति यामम्।।

(Av.x.2.6.)

Kah sapta khani vi tatarda sirsani karnavimau nasike caksani mukham.

yesam purutra vijayasya mahmani catuspado dvipado yanti yamam..

को अस्मिन्प्राणमवयत्को अपानं व्यानमु।

समानमस्मिन्को देवोऽधि शिश्राय पूरुषे।। (Av.x.2.13)

Ko asminpranamavayatko apanam vyanamu.

samanamasminko devo dhi sisraya puruse..

Creation: Order and Purpose II

"By whom has this earth been put in order? By whom is the sky set higher up? Who has put this midspace above and spreading crosswise?"

"With what did he spread the waters around? with what did he make the day so shining? spread the waters around? With what did he enkindle the dawn? With what did he grant the advent of the evening?"

"Which was the sole deity that reposed the sacrifice within this man? Who placed the truth and the untruth whithin him? wherefrom comes the death and the Wherefrom the immortality?"

केनेयं भूमिर्विहिता केन द्यौरुत्तरा हिता।

केनेदमूर्ध्वं तिर्यक्चान्तरिक्षं व्यचो हितम्।। (Av.x.2.24)

keneyam bhumirvihita kena dyauruttara hita.

kenedamurdhvam tiryakcantariksyam vyaco hitam..

को अस्मै वासः पर्यदधात्को अस्यायुरकल्पयत्।

बलं को अस्मै प्रायच्छत्को अस्याकल्पयज्जवम्।। (Av.x.2.15)

ko asmai vasah paryadadhatko asyayurakalpayat.

balam ko asmai prayacchatko asyakalpayajjavam..

को अस्मिन्यज्ञमदधादेको देवोऽधि पूरुषे

को अस्मिन्त्सत्यं कोऽनृतं कुतो मृत्युः कुतोऽमृतम्।। (Av.x.2.14)

Ko asminyajnamadadhadeko devo dhi puruse.

Ko asmintsatyam ko nrtam kuto mrtyuh kuto mrtam..

The Eternal

"They proclaim Him to be eternal.

But He may become new again even today. Day and night are reproduced, each one from the two forms which the other wears."

"From the full it takes out the full, the full is impregnated with the full. May we know today where from that gets impregnated."

सनातनमेनमाहुरुताद्य स्यात्पुनर्णवः।

अहोरात्रे प्र जायते अन्यो अन्यस्य रूपयोः।। (Av.x.8.23)

sanatanamenamahurutadya syatpunarnavah.

ahoratre pra jayate anyo anyasya rupayoh..

पूर्णात्पूर्णमुदचति पूर्ण पूर्णेन सिच्यते।

उतो तदद्य विद्याम यतस्तत्परिषिच्यते।। (Av.x.8.29)

Purnatpurnamudacati purnam purnena sicyate.

uto tadadya vidyama yatastatparisicyate..

To Be Continue...

ग्रन्थ परिचय

पूना-प्रवचन (उपदेश मंजरी)

प्रश्न 1: महात्मा आनन्द स्वामी जी की कथाओं को आधार बनाकर उन्हें अनेक पुस्तकों का रूप दिया गया है क्या महर्षि के प्रवचनों की भी कोई पुस्तक है?

उत्तर: हां, महर्षि दयानन्द ने पूना में 15 व्याख्यान दिये थे, जिन्हें पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया गया है। इस पुस्तक का नाम 'उपदेश मंजरी' है।

प्रश्न 2. ये व्याख्यान अथवा उपदेश महर्षि ने कब दिये थे?

उत्तर: बम्बई में आर्य समाज की स्थापना करने के पश्चात् महर्षि पूना गये, जहां उन्होंने 20 जून से 5 सितम्बर 1875 तक (अर्थात् लगभग दो मास तक) निवास किया था। इसी दौरान उन्होंने ये 15 व्याख्यान दिये थे।

प्रश्न 3. इन दो माह के दौरान महर्षि ने क्या केवल 15 व्याख्यान ही दिये?

उत्तर: ऐसा नहीं है, विभिन्न शोधों के आधार पर ज्ञात होता है कि महर्षि ने इस दौरान कुल 54 व्याख्यान दिये थे, परन्तु संकलन केवल 15 व्याख्यानों का ही हो पाया था।

प्रश्न 4: महर्षि तो प्रायः संस्कृत में व्याख्यान देते थे। क्या यह पुस्तक भी संस्कृत में है?

उत्तर: नहीं, प्रारम्भ में कुछ वर्षों तक महर्षि संस्कृत में बोलते रहे थे, परन्तु बाद में उन्होंने हिन्दी भाषा में बोलने का अभ्यास कर लिया था। इन दिनों भी उनका हिन्दी में बोलने का अभ्यास हो चुका था। अतः ये व्याख्यान हिन्दी में होने से पुस्तक भी हिन्दी भाषा में है।

प्रश्न 6: इनका मराठी भाषा में अनुवाद किसने किया था?

उत्तर: एक सूचना के अनुसार, इनका मराठी भाषा में अनुवाद पूना हाई स्कूल के सहायक मुख्याध्यापक श्री गणेश जनार्दन आगाशे ने किया था। तत्पश्चात् इनका संग्रह और सम्पादन श्री गोविन्द रानाडे जैसे विद्वान ने किया।

प्रश्न 7: इसके पश्चात् इनका हिन्दी में अनुवाद किसने किया था?

उत्तर: एक महाराष्ट्र ब्राह्मण श्री पं. गणेश रामचन्द्र ने इनका हिन्दी भाषा में अनुवाद किया था।

प्रश्न 8: इनका सर्वप्रथम प्रकाशन किसने और कब करवाया था?

उत्तर: सर्वप्रथम, इनका पुस्तक रूप में प्रकाशन आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने सन् 1983 में करवाया था। वैसे इससे पहले महर्षि के जीवनकाल में ही दिसम्बर, सन् 1881 से पूर्व, गुजराती भाषा में 'स्वामी दयानन्द सरस्वती नु भाषण' नाम से उपरोक्त मराठी संस्करण का प्रकाशन हो गया था।

प्रश्न 9. महर्षि ने पूना में ये 15 व्याख्यान किस विषय पर दिये थे?

उत्तर: महर्षि ने ये व्याख्यान भिन्न-भिन्न विषयों पर दिये थे। इनकी सूची निम्नलिखित है:-

1. ईश्वर सिद्धि- दिनांक 4 जुलाई, सन् 1875 ई. रविवार (आषाढ़ सुदी प्रतिपदा, विक्रमी संवत् 1932)।
2. ईश्वर सिद्धि पर वाद-विवाद- 6 जुलाई, सन् 1875 ई., मंगलवार (आषाढ़ सुदी 4, विक्रमी संवत् 1932)।
3. धर्माधर्म-8 जुलाई, सन् 1875 ई. बृहस्पतिवार (आषाढ़ सुदी 6, विक्रमी संवत् 1932)।

धर्माधर्म विषय पर शंका-समाधान- 10 जुलाई, सन् 1875 ई. शनिवार (आषाढ़ सुदी 8, विक्रमी संवत् 1932)।

5. वेद- 13 जुलाई, सन् 1875 ई., मंगलवार (आषाढ़ सुदी 10, विक्रमी संवत् 1932)।
6. पुनर्जन्म- 17, जुलाई सन् 1875 ई. , शनिवार (आषाढ़ सुदी 14, विक्रमी संवत् 1932)।
7. यज्ञ और संस्कार-20, जुलाई, सन् 1875 ई. मंगलवार (श्रावण बदी 2, विक्रमी संवत् 1932)।
8-13. इतिहास-क्रमशः 24, 25, 27, 29 व 31 जुलाई एवं 2 अगस्त, 1875 ई.।
14. नित्य कर्म और मुक्ति-3 अगस्त, सन् 1875 ई।
15. स्वयं कथित जीवनचरित-4 अगस्त, 1875 ई।

प्रश्न 8: इन 15 व्याख्यानों में 6 व्याख्यान तो इतिहास पर हैं। इनमें कौन से इतिहास का वर्णन है?

उत्तर: यहां इतिहास शब्द से सामान्य अर्थ से भिन्न अर्थ लिया गया है। महर्षि के अनुसार 'इतिहास नाम वृत्तम्' इतिवृत्त अर्थात् अतीत के वर्णन को इतिहास कहा जाता है। इतिहास जगदुत्पत्ति से प्रारंभ होकर आज के समय तक चला आता है। इस अर्थ के आधार पर महर्षि ने 'जगत् कैसे उत्पन्न हुआ और किसने उत्पन्न किया?' जैसे दार्शनिक एवं महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का विवेचन सांख्य दर्शन, वेद-मन्त्रों एवं उपनिषदों के आधार पर स्पष्ट एवं बहुत सुन्दर प्रकार से किया है।

प्रश्न 9. वैसे तो जिन विषयों पर महर्षि के व्याख्यान हैं, उन विषयों का विवेचन उन्होंने सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य-भूमिका आदि ग्रन्थों में भी किया है। फिर व्याख्यानों में क्या विशेषता है?

उत्तर: हां, यह सत्य है कि महर्षि ने अपने गन्थों में भी इन विषयों का विवेचन किया है। परन्तु कुछ विषयों का वर्णन इन व्याख्यानों में युक्तियों और प्रमाणों के आधार पर अधिक स्पष्ट रूप में किया गया है, जबकि एक स्थान पर ईश्वर द्वारा प्रदत्त वेद ज्ञान के विषय में विरोधी विचार भी मिलता है। छठे व्याख्यान में महर्षि ने वेद ज्ञान को सृष्टि की उत्पत्ति के पांच वर्ष पश्चात् दिया गया माना है। जबकि महर्षि के स्वयं के ग्रन्थों के आधार पर यह सिद्धान्त उन्हीं के विरुद्ध है। सम्भवतः यह रिपोर्ट लेने वालों की भूल हो सकती है। ऐसे विरोधी स्थानों में महर्षि के ग्रन्थों को ही प्रामाणिक मानना चाहिए।

महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय (प्रश्नोत्तरी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें।
-मो. 09540040339

विश्व पुस्तक मेला, दिल्ली में हिन्दू समाज की स्थितिः एक विश्लेषण

दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित विश्व पुस्तक मेला 2016 में सभी धर्मों, पंथों और मत-मतान्तरों के विभिन्न स्टाल देखने को मिले। जहां एक ओर मुस्लिम और ईसाई समाज के प्रचारक कुरान और बाईबिल वितरित कर रहे थे, वहीं दूसरी ओर हिन्दू समाज के विभिन्न मत-मतान्तर के लोग अपने-अपने प्रचार में लगे थे। जहां एक ओर इस्लामिक फिरकों के स्वयं सेवक कुरान की मान्यताओं का बढ़-चढकर प्रचार-प्रसार कर रहे थे वहीं दूसरी ओर हिन्दू समाज के मत-मतान्तर अपने पंथ तक सीमित थे। उदाहरण के लिए- आशा राम बापू के भक्त यही प्रचार कर रहे थे कि हमारे बापू निर्दोष हैं।

नित्यानन्द स्वामी के भक्त प्रचार कर रहे थे कि हमारे स्वामी जी को फंसाया गया है।

ओशो के भक्त यही प्रचार कर रहे थे कि सम्भोग से ही समाधि मिलेगी।

आशुतोष महाराज के भक्त प्रचार कर रहे थे कि हमारे गुरु चिर साधना में

लीन है इसलिए रेफ्रिजरेटर में बंद हैं।

गीता प्रेस वाले कर्म पुराण, गरुड़ पुराण बेच कर लोगों को संतुष्ट करने का प्रयास कर रहे थे।

कबीर पंथी अपनी वाणियों से अपने आपको सेक्युलर सिद्ध करने में लगे हुए थे।

सहजानन्द के शिष्य अपने गुरु को कल्कि अवतार सिद्ध करने में लगे हुए थे और सबसे प्रसिद्ध स्वामी विवेकानन्द के प्रचारक सभी को पीछे छोड़ते हुए रामकृष्ण मिशन द्वारा प्रकाशित मुहम्मद साहिब और ईसा मसीह की जीवनियां बेचते देखे गये। परोक्ष रूप से वे विधर्मियों का धर्मान्तरण करने का कार्य सरल करते दिखे।

हिन्दी साहित्य हाल में केवल और केवल आर्य समाज ही राष्ट्रवादी, समाज सुधारक, नवचेतना, सदाचारी, पाखंड और गुरुडम से मुक्ति दिलाने वाला, विधर्मियों के जाल से बचाने वाला साहित्य वितरित करता दिखाई दिया। जहां एक ओर इस्लामिक स्टाल विश्व व्यापी आतंकवाद पर बचाव की दृष्टि में दिखे वहीं दूसरी ओर आर्य समाज वेदों के ज्ञान का प्रचार-प्रसार करता दिखाई दिया। जहां एक ओर मुस्लिम प्रचारक वेदों को बीते समय का और कुरान को आधुनिक एवं विज्ञान अनुकूल बताते दिखे वहीं दूसरी ओर आर्य समाज सत्यार्थ प्रकाश के चौदहवें समुल्लास की सहायता से इस्लाम की मान्यताओं की तर्कपूर्ण समीक्षा करता दिखा। जहां एक ओर इस्लामिक प्रचारक जाकिर नाइक की पुस्तकों का सहारा लेकर प्रचार करते दिखे वहीं दूसरी ओर आर्य समाज वेदों के विषय में प्रचलित भ्रान्तियों का निवारण करता दिखा। हिन्दू समाज के विभिन्न स्टाल केवल अपने चेलों की संख्या बढ़ाने में लीन थे वहीं विधर्मियों के कुचक्रों से युवकों को बचाने का श्रेय केवल आर्य समाज ने लिया। यह अटल सत्य है कि आर्य समाज हिन्दू समाज के धर्मरक्षक के रूप में जिस प्रकार से पूर्व में कार्य करता आया है उसी प्रकार से इस मेले में भी उसने किया। जो पाठक इस वर्ष मेले में आये थे उन्होंने इस पुरुषार्थ के प्रत्यक्ष दर्शन किये होंगे जो पाठक मेले में भाग नहीं ले सके उनको अगले वर्ष का अभी से धर्म सेवा हेतु मेरी ओर से आमंत्रण है।

-डॉ. विवेक आर्य

पुस्तक मेले में तूफानी प्रचार-प्रसार : लगा जैसे मिट गए सब विरोधाभास

आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली ने 9-17 जनवरी, 2016 को पुस्तक मेले में जिस प्रकार से आर्ष/वैदिक साहित्य का तूफानी प्रचार किया उससे आर्य समाज में विघटन की दीवारें धराशाई हो गई। आर्य समाज में फिर से एकता का सूत्रपात हुआ। आर्यसमाज के सभी वर्ग अत्यंत उत्साहित दिखे। सभा के सभी अधिकारी समर्पण भावना के साथ सपरिवार बच्चों सहित मिशनरी भावना के साथ दिन भर सेवा देते रहे । यहाँ सभी अधिकारी, अधिकारी नहीं बल्कि कार्यकर्त्ता और स्वयं सेवक के रूप में सफाई करते, पुस्तकों के बंडल ढोते , आगंतुकों को सत्यार्थ प्रकाश बांटते, विधर्मियों के साथ तर्क वितर्क करते , कार्यकर्ताओं के जलपान की व्यवस्था में पूरी विनम्रता के साथ अनथक सेवा करते रहे। अधिकारीपन का भाव किंचित मात्र भी नहीं दिखा। बिना खाने पीने की चिन्ता के बस ऋषि दयानंद की विचार धारा और साहित्य को जन जन तक पहुचाने की होड़ में जुटे रहे। यह मेला आर्य समाज के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत कर रहा था। परस्पर प्रीतिभाव और एक दूसरे का सम्मान आर्यत्व का उदाहरण प्रस्तुत्त कर रहा था। स्वामी सम्पूर्णानंद जी महाराज, स्वामी आत्मानंद जी वा अन्य विद्वान् बिना भोजन, जलपान की परवाह किए घूम घूम कर पुस्तकें हाथों में ले आगंतुकों को प्रभावित करते और शंका समाधान करने में सारा सारा समय लगे रहे। सभी अपनी अपनी सेवा से एक दूसरे को प्रेरणा और ऊर्जा प्रदान कर रहे थे। प्रचार स्टालों पर स्वामी आर्यवेश एवं स्वामी अग्निवेश भी पहुंचे। ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र ने मेले में सभा के स्टाल और प्रभाव को लेकर एक समाचार-वीडियो भी बनाई जिसे उन्होंने व्हाट्स एप्प के माध्यम से देश विदेश में हजारो हजारो लोगों को भेजा।

मेले में परोपकारिणी सभा ने भी प्रचार स्टाल लगाया था जिस पर सभा प्रधान डा. धर्मवीर भी सपत्नीक कार्यकर्ताओं सहित साहित्य प्रचार के कार्य में पूरा समय अपना योगदान देते रहे।

मैंने कुछ वृद्धजनों को यह दृश्य देख हर्षित हो, प्रसन्न हो, आश्वस्त होते देखा- सुना, जो कह रहे थे कि आर्य समाज की आंधी तो अब चली है और पाखंड, गुरुडम, ढोंग अब उड़ के रहेगा। आर्य समाजियों के उत्साह, एकता, आक्रामकता, तार्किकता को देख दिव्य जागृति मंच, राम कृष्ण मठ, बापू आसाराम, आचार्य रजनीश, कबीरपंथी और मुस्लिम स्टालों के कार्यकर्त्ताओं के चेहरे निस्तेज, फक्क, और घबराहट लिए हुए दिखे ।

काश! यह मेला लंबा चलता तो शायद आर्य समाज के सभी गुटों के पारस्परिक मतभेद और वैमनस्य का हमेशा के लिए धो डालता । सभी एकता के सूत्र में एकता के साथ पुनः खड़े हो एक स्वर में निश्चित बोलते 'वैदिक धर्म की जय'।

फिर भी लगता है यह काफी हद् तक आर्य समाज के स्वर्णिम युग को लौटाने में सफल हुआ। इस हेतु आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारियों को हृदय से साधुवाद।

- सुभाष दुआ

संस्कृतम्

भ्रष्टाचारः, समस्या समाधानं च

(कः भ्रष्टाचारः, भ्रष्टाचारस्य भेदाः, भ्रष्टाचारस्य दोषाः, तस्य निरोधोपायाः)

भ्रष्टाचारस्तु सर्वेषां, पापानां मूलकारणम्।
भ्रष्टाचारेण लोकानां, सन्मतिः क्षीयते सदा।।

कः भ्रष्टाचारः? अनुचितसाधनेन धनोपार्जनम्। भ्रष्टाचारः अनेकरूपः। यथा-उत्कोच- (घूस) ग्रहणम्, खाद्यवस्तुषु अखाद्यस्य मिश्रणम्, अनुचित-साधनेन धन-प्राप्तिः, स्वेष्ट-कार्यस्य संपादनार्थम् उत्कोच-प्रदानम्। साम्प्रतं भारतवर्षे भ्रष्टाचारः विष-वृक्षवत् संवर्धते। उत्कोचदानम्, उत्कोचग्रहणं च आमूलं दृश्यते। उत्कोच-प्रदानं विना राजकीय-कार्यालयादिषु स्वल्पमयि कार्य साधयितुं न शक्यते। पदे पदे उत्कोच-ग्रहण-समस्या वर्तते। केवलं सामान्याः अधिकारिण एव अत्र न प्रवर्तन्ते, अपितु उच्चधिकारिणः अपि आमूलम् उत्कोचग्रहणे प्रवृत्ताः। 'यथा राजा तथा प्रजा' यदा उच्चाधिकारिणः उत्कोचं गृहणन्ति, तदा निम्नपदस्थाः अधिकारिणः अपि निर्भयम् उत्कोच-ग्रहणे प्रवर्तन्ते। भारते भ्रष्टाचारस्य स्थितिः भयावहा वर्तते। जनता किंकर्तव्य-विमूढा वर्तते। कं नु शरणं गच्छामि, न कश्चित् मां शृणोति।

भ्रष्टाचारः शतविधः। यो यत्र वर्तते, स तत्रैव भ्रष्टाचारे प्रवृतः। मंत्रिणः सांसदाः, विधायकाः अपि एतस्मिन् कार्यो न लज्जाम् अनुभवन्ति।

सत्यम् एतद् यद् भ्रष्टाचारः असाध्यो रोगः। परन्तु निपुणाः भिषजः असाध्यमपि रोगं साध्यं कुर्वन्ति। यत्ने कृते नहि किंचिद् असाध्यं भवति। सर्वकारस्य शिथिलतैव अत्र प्रमुखं कारणम्। यदि सर्वकारः दृढ- निश्चयेन प्रवर्तेत, तदा न किंचिद् असाध्यम्।

भ्रष्टाचारस्य निषेधोपायाः- 1. आचारशिक्षायाः, नैतिकशिक्षायाश्च शतविधः प्रचारः प्रसारः च स्यात्। 2. कठोर-दण्ड-व्यवस्था भवेत्। महाभारते उच्यते-'दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः, दण्ड एवाभिरक्षति'। 3. धन-लोलुपतायाः परित्यागस्य शिक्षणम्। 4. विलासि-जीवनस्य परित्यागः। 5. कठोर-श्रमस्य शिक्षा। 6. राजपुरुषाणां चल-अचल-संपत्ति-घोषणा अनिवार्या स्थात्। 6. मनोः शिक्षायाः प्रसारणम्। यथा-

अधर्मेणैधते तावत्, ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नान् जयति, समूलस्तु विनश्यति।। मनु. 4.174

रचनानुवादकौमुदी
(डॉ. कपिलदेव द्विवेदी)
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन हेतु आज ही अपना ऑर्डर प्रेषित करें या मो. 09540040339 पर सम्पर्क करें।

साप्ताहिक आर्य सन्देश

25 जनवरी 2016 से 31 जनवरी, 2016

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2015-2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 28 जनवरी 2016/ 29 जनवरी, 2016

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0 (सी0) 139/2015-2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 27 जनवरी, 2016

पृष्ठ 1 का शेष

लाशों की जाति ...

खो जाने के डर से यह लोग चुप रहे?

अभी हमने कुछ दिन पहले मीडिया और नेताओं का दोहरा मापदंड देखा था जब मालदा, पूर्णिया, और जहानाबाद मजहबी आग में जल रहे थे तो सोचा कोई तो होगा जो इस घटना पर अपना मूक प्रदर्शन तोड़ेगा किन्तु इस मामले पर किसी राजनेता की आँखें नम नहीं हो पाई, ना कोई तथाकथित राष्ट्र चिन्तक इस मामले पर मौखिक रूप से निंदा करता दिखाई दिया! आखिर क्यों? आज इनकी आँखों में आंसू कहां से आये? देश में हजारों किसान आत्म हत्या कर लेते हैं, परन्तु इनमें अगड़े, पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक समुदायों और सब धर्मो के बदनसीबों के होने के कारण इसे कोई भी दल वोट बैंक में कोई खास बढ़ोत्तरी न होने के कारण राजनैतिक मुद्दा नहीं बनाता। परन्तु वहीं लोग यदि कोई दलित या मुस्लिम आत्महत्या कर लेता है तो देश की राजनीति में भूचाल आ जाता है ऐसे में राजनैतिक दलों द्वारा इंसान की जान की अलग कीमत लगाना उचित नहीं लगता। पिछले कुछ वर्षो से हमें भारत में कोई इन्सान मरता दिखाई नहीं दिया यहाँ यदि कोई मरता है या तो वो दलित होता है, मुस्लिम होता है, सिख होता है या ईसाई। क्या राजनीति सिर्फ लाशों का जातिगत और धार्मिक तमाशा बनाकर बेचने तक सीमित रह गयी? रोहित की मौत दुखद घटना थी हमारी सवेंदनायें रोहित के परिवार के प्रति हैं। हम इस जातिगत व्यवस्था के खिलाफ हैं, हम वैदिक सिद्धांत मनुर्भव के पक्षधर हैं। हम मनुष्य व्यवस्था के पक्षधर है अत: हमारा भारत वर्ष के तमाम नेताओं को सिर्फ इतना कहना है कि लाशों की जाति-धर्म तलाश कर भेदभाव न करें! **-राजीव चौधरी**

प्रतिष्ठा में,

आर्य उपदेशक एवं पुरोहित प्रशिक्षण शिविर

आर्य समाज प्रीत विहार दिल्ली-110092 के तत्वावधान में दिनांक 1 से 16 अप्रैल 2016 तक आर्य उपदेशक एवं पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। शिविरोपरांत सफल शिविरार्थियों को निश्चित सेवा का अवसर दिया जाएगा। शिविरार्थी बनने के लिए गृहकार्य- 1) दूरभाष 011-22504658 पर प्रात: 8:30 से सायं 6 बजे के मध्य समय लेकर अपना अस्थाई पंजीकरण कराना, 2) पंजीकरण शुल्क 500 रुपये भेजने की व्यवस्था करना, 3) संस्कार विधि व सत्यार्थ प्रकाश, ऋतु अनुसार बिस्तर-वस्त्र साथ लाना, 4) 1 अप्रैल को शाम तक शिविर स्थल पर पहुंचना, 5) प्रचारक बनने हेतु मन को तैयार करना। - **आयोजक सुरेंद्र कुमार रैली प्रधान**

आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन रतलाम स्थगित

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में मध्य प्रदेश के रतलाम में आयोजित होने वाले 14वें आर्य परिवार खेद है कि वैवाहिक परिचय सम्मेलन को किन्हीं अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दिया गया है। आयोजन की नई तिथि स्थान एवं समय की सूचना आर्य संदेश के आगामी अंकों में प्रकाशित की जाएगी। समस्त पाठकों एवं प्रतिभागियों को होने वाली कठिनाई के लिए क्षमा प्रार्थी हैं।

-अर्जुन देव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (09414187428)

सिर्फ ऑड-ईवन से नहीं वैदिक यज्ञ से होती है

पर्यावरण की शुद्धि

पर्यावरण शुद्धि के लिए जरूरी है कि हम अपने आस-पास छोटे-छोटे पेड़-पौधों को आश्रय दे और कीट-पतंगों, मच्छर आदि को पनपने से रोकें इसके लिए जरूरी है कि हम स्वयं यज्ञ करें और अपने ईष्ट-मित्रों, रिश्तेदारों को भी यज्ञ कराने के लिए प्रेरित करें। यज्ञ में प्रयुक्त वेद मंत्रों से जहां एक ओर ध्वनि प्रदूषण दूर होता है वहीं यज्ञ प्रयुक्त आयुर्वेदिक जड़ी-बूटियों के जलने से उठने वाले धुंए से वातावरण विशुद्ध होता है। यज्ञ से होने वाले अनेक लाभों को दृष्टि में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिल्ली एवं एन.सी.आर.क्षेत्रों के लिए एक विशेष योजना शुरू की हुई है जिसका लाभ आप किसी भी दिन किसी भी समय प्राप्त कर सकते हैं। इस योजना का नाम है 'घर-घर यज्ञ हर घर यज्ञ'। यह योजना पूर्णत: नि:शुल्क है। आप इस नेक कार्य को सम्पन्न कराने के लिए सभा द्वारा नियुक्त पं. सत्य प्रकाश जी से मो. 09650183335 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

प्रवेश सूचना

आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर लुधियाना (पंजाब)

सत्र 2016-2017

छठी कक्षा में (आयु 9 से अधिक 11 से कम) कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/- रुपए) भरकर 31.03.2016 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र द्वारा भी प्राप्त किये जा सकते हैं।)

● कन्याओं की लिखित प्रवेश-परीक्षा 03 अप्रैल 2016 दिन रविवार को प्रात: 8.00 बजे होगी। ● सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा। सत्यानन्द मुंजाल, कुलपति, दूरभाष: 9814629410

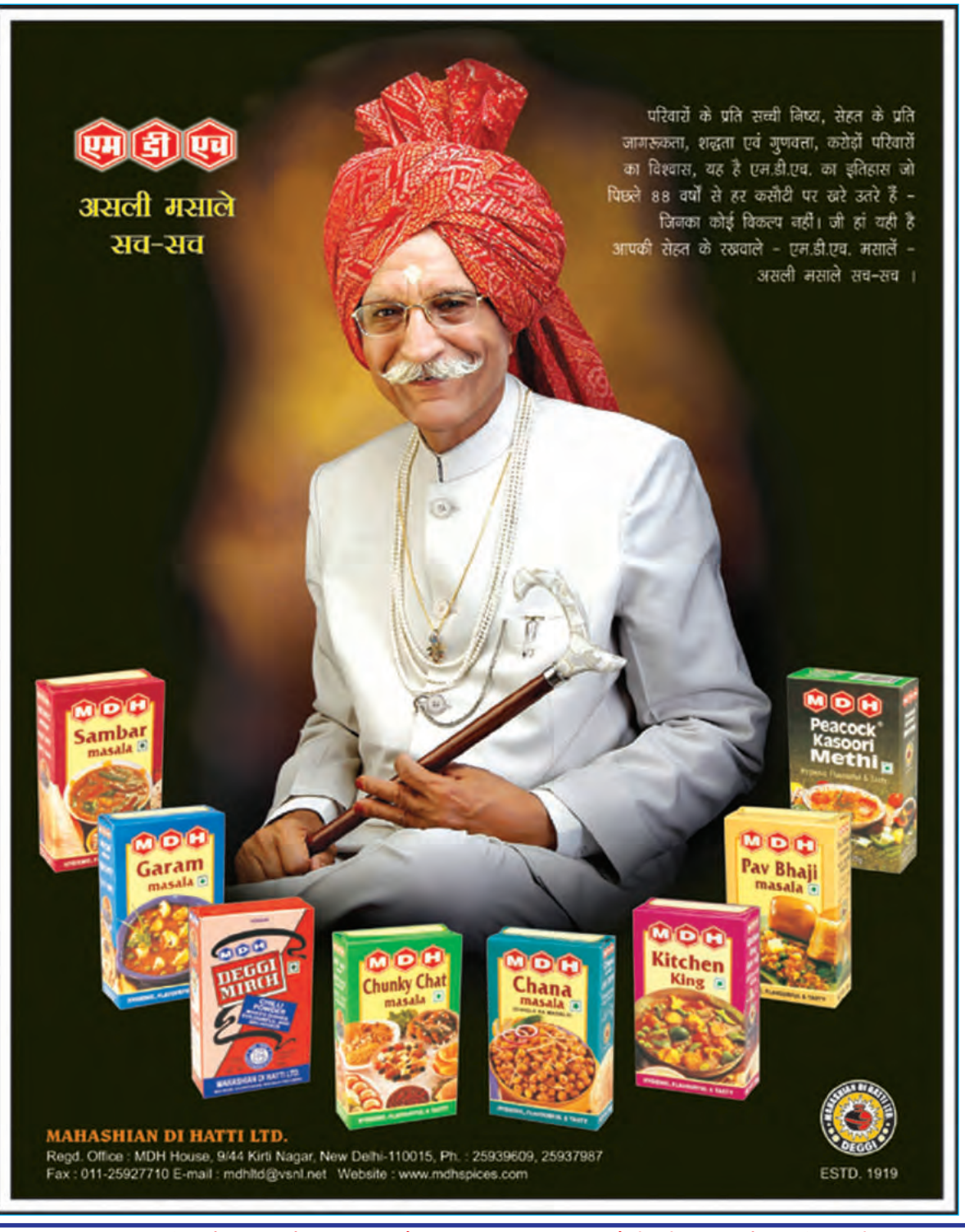

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2 नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1, फोन:23360150, 23365959, E-mail: aryasabha@yahoo.com; Web: thearyasamaj.com से प्रकाशित

सम्पादक: धर्मपाल आर्य सह सम्पादक: विनय आर्य व्यवस्थापक: शिव कुमार मदान सह व्यवस्थापक: आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर, एस.पी. सिंह